श्री रामलोचन ठाकुर मैथिली जगतक सुपरिचित निस्सन हस्ताक्षर छथि । मूलतः कवि होइतहुँ प्रयोजने गीतो लिखैत छथि । मैथिली आन्दोलन, रंगमंच, आ पत्रिका सँ संपर्कित रहबाक कारणे प्रयोजनक अनुमान सहजहिं कयल जा सकैछ । १९७० सँ १९९५ धरिक ऐहने रचना सभक संकलन थिक 'अपूर्वा' ।

श्री रामलोचन ठाकुर अग्रदूत नामे कथा आ कुमारेश काश्यप नामे हास्य व्यंग्य सेहो लिखैत छथि । हिनक प्रकाशित पोथी - इतिहासहंता (कविता, १९७७), वैतालकथा (हास्य-व्यंग्य, १९८१), प्रतिध्वनि (अनु. कविता, १९८२), जादूगर (अनु. नाटक, १९८२), मैथिली लोक कथा (१९८३), माटि पानिक गीत (१९८५) ओ देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (कविता, १९८६) बेस चर्चित रहल अछि ।

विश्वास अछि, 'अपूर्वा' गीत छन्द मय काव्यकृति समुच्चय मे मानदण्ड सिद्ध होयत ।

शुभास्ते सन्तु पंथानः ॥

- ब्रह्मानन्द सिंह झा

অপূর্বা



ৰাম লোচন ঠাকুৰ

अपूर्वा

रामलोचन ठाकुर

मिथिला समाद, कलकत्ता

प्रकाशक :
मिथिला समाद
२६डी, आर.जी.कर रोड
श्याम बाजार
कलकत्ता - ७००००४

आवरण शिल्पी : मोनू

प्रकाशन तिथि : विद्यपति स्मृति दिवस, १४०३
दिनांक : २३ नवम्बर, १९९६
प्रथम संस्करण, ११०० प्रति

मूल्य : बीस टाका

मुद्रक :
क्लैरियन प्रिंटिंग
४/२ बी, लियोनार्ड रोड
हेस्टिंग्स, कलकत्ता - ७०००२२

APURVA / RAM LOCHAN THAKUR

मीना

आ

ललन के

— राम लोचन ठाकुर

अपूर्वाक पूर्व कथ्य

भौतिकवाद व सुख सुविधाक दिन-दिन नमरैत मरीचिका मे किछु वस्तुक लोप भेल जा रहल अछि । एहेन एक वस्तुक नाम भेल निष्ठा । आइ बहुत गोटे लेल निष्ठा मुखौटा वा गहना थिक । प्रयोजन भेल तँ धारण कएलनि, प्रयोजन नहि भेल तँ जुगता कए राखि देलनि। राजनीति सँ धर्म, कला, संस्कृति,व्यवसाय धरि सभ ठाम निष्ठाक दुर्गति देखल जा सकैछ।

रामलोचन ठाकुर लग कतोक वस्तुक अभाव छनि । आलोचनाक निष्पक्ष कसौटी पर राखि कए देखल जाए तँ किछु दोष अवश्य भेटत । ठाम-ठाम हुनका मान्यता सँ सहमति होएब कठिनाह बुझि पड़त । मुदा राम लोचन ठाकुर लेल निष्ठा मुखौटा वा गहना नहिं थिक।

आन्दोलन सँ रंगमंच आ पत्रकारिता होइत साहित्य सृजनक पच्चीस सालक यात्रा मे रामलोचन ठाकुरक निष्ठा पर कतहु कहिओ ककरो कोनो सन्देह नहि भेलै । परम्परागत भाव सँ कही तँ हुनक मन, वचन आ कर्म एक दोसर सँ फराक नहि रहल ।

अंतर मे एक रहितहु हुनक काव्य रचना कागत पर दू टा पृथक धाराक आभास दैत अछि । एक धारा मे ''इतिहासहंता'' (१९७७) आ 'देशक नाम छलै सोन चिड़ैया'' (१९८६) क रचना सभ अछि । दोसर धाराक प्रतिनिधि भेल ''माटि पानिक गीत'' (१९८५)। अपूर्वा मे एहि दोसर धाराक रचना सभक संकलन अछि । एहि रचना सभक केन्द्र मे मिथिला आ मिथिलाक भाषा-संस्कृति अछि । एहि संकलनक अधिकांश रचना गेय अछि।

कविता आ गीतक बीच सीमा रेखा ताकब कठिन अछि । मुदा निष्ठा त दूनू में ताकल जा सकैछ । एहि संकलन मे तँ तकबोक प्रयोजन नहि, कदाचित सभ पाती मे विद्यमान छैक।

हमरा लोकनिक अभिलाषा अछि जे गायक लोकनि ई गीत सभ गाबथि। मैथिली गीतक दीर्घ परम्परा आ विशाल भंडार मे ई तुच्छ सनेस जुमबैत ''मिथिला समाद'' (मासिक पत्रिका) परिवार अपन सुधी पाठक आ उदार संरक्षक लोकनिक प्रति आभार प्रकट करैत अछि ।

कमलेश झा **सुनील ठाकुर 'ललन'**

भूमिका

कला आ साहित्य सँ भिन्न भिन्न युग मे भिन्न अपेक्षा रहल । कहिओ साहित्यक सभ सँ पैघ काज छल देवी देवताक स्तुति आ महिमा गान, राजा-रानी आ हुनक प्रियजन केर विरुद गान, राजा-रानी कें जे नीक लगतैन तेहन रचना । राजाक शौर्य, नारीक सौन्दर्य, श्रीमन्तक ऐश्वर्य, कामकला केर सांगोपांग वर्णन सँ साहित्य पुष्ट होइत गेल । काल्हि साहित्य केर विषय वस्तु सभ पर तारतम्य ठाढ़ भेल । साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, आर्थिक शोषण आदि केर धाह मे असंख्य लोक असहज भए गेल । आर्थिक शोषण कोना ठमकाओल जेतै ताहि पर विचार होमए लागल।

कार्ल-मार्क्स, सिंगमंड फ्रायड, चार्ल्स डार्विन आदि चिन्तक तेहेन नव चिन्तन धारा प्रवाहित कए देलनि जे पुरान मान्यता सभ अनेरे ढनमना गेल । जीवनक प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण स्वीकार कए लेब कला-साहित्य लेल अनिवार्य भए गेल ।

जीवन के समस्त गुण दोषक संग स्वीकार करबाक विवशता छल । मैथिली कविता मे कोशी, कमला, गंडक, बागमती केर वर्णन होमए लागल, गाम-घर केर वर्णन, कोढ़ि किसान जातिक बीझ लागल फार केर वर्णन होमए लागल ।

न्यायाधीश एहि समाजक लोक होइत अछि । न्यायाधीश सँ लोक आशा करैत अछि जे दोषी आ निर्दोष कें फराक करत । साहित्य सँ लोक आशा करैत अछि जे नीक कें नीक आ अधलाह के अधलाह कहत । एहि दायित्वक निर्वाह बड़ हल्लुक काज नहि थिक । तीन दशक मे राम लोचन ठाकुर ई दायित्व निमाहबाक यथासाध्य प्रयास कए रहल छथि ।

हुनक अवदान मैथिली भाषा साहित्य आन्दोलन, मैथिली पत्रकारिता, आ मैथिली रंगमञ्च मे महत्वपूर्ण अछि । आन विधा मे ओ कदाचित प्रयोजन भेला पर रचना कएलनि। अपन कथ्य लेल हुनका कविता उपयुक्त बुझि पड़लनि ।

रामलोचन ठाकुर अपन नामक अतिरिक्त अग्रदूत, कुमारेश काश्यप, मुजतबा अली छद्मनामे लिखैत रहल छथि । पोस्टर, पर्चा, कतिपय निबन्ध/अनुवाद रचना, विभिन्न पत्रिकाक सम्पादकीय आदि अनाम वा आन आन लोक सभक नाम सँ लिखने छथि । तैं हुनक समस्त रचनाक संकलन आ अध्ययन बड़ कठिन अछि । एहेन समस्या आनो लेखक

लोकनिक संग रहैछ । लेखन मे हुनक आयाम-विधा, शैली, भाषा वर्तनी आदिक विविधता-विस्मयकारी ।

अनुमान अछि जे हुनक पहिल रचना 'मिथिला दर्शन' (कलकत्ता) मे छपल हैत। पहिल व्यंग्य रचना -तोता मैना संवाद-अथ कथा इजोतक खाम्ह प्रसंग-सोमदेव सम्पादित मिथिला भूमि (दड़िभंगा) मे छपल । पछाति हुनक व्यंग्य रचना सभ तोता मैना सम्बाद बेताल कथा, लाल बुझक्करक चिट्ठी आदि शीर्षक सँ विभिन्न पत्रिका मे छपल।

रामलोचन ठाकुरक एखन धरि प्रकाशित पोथी अछि-इतिहासहंता (कविता,१९७७), बेताल कथा (व्यंग्य १९८१), प्रतिध्वनि (अनूदित कविता १९८२), जादूगर (अनूदित नाटक १९८२), मैथिली लोककथा (१९८३), आजुक कविता (संकलन, सम्पादन आ प्रकाशन १९८४), माटि पानिक गीत (१९८५), देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (कविता १९८६),

'इतिहासहंता' हुनक सोड़ह गोट कविताक संकलन - मैथिली, सर्वहारा टी स्टाल, विध्वंस मात्र, नाटक, निर्देशक आ एक गोट कविता, अन्तरक ज्वाला हमर, अग्रजक नाम प्रजातंत्र, अग्रजक नाम केहेन लागल अहाँ के, अग्रजक नाम/हम बिसरि गेल छी, एहि जम्बू द्वीप भारत खंड मे, समानधर्मक नाम, अग्रजक नाम इतिहासहंता, अनुजक नाम, व्यवस्थाक नाम,कंकावतीक कैबरे, साँझ हमरा आङ्गन मे, आ जेठुआ मेघ ।.मई १९७२ सँ अगस्त १९७७ अर्थात तिरसठि मासक अवधि मे रचित कविता सभ ।

कतोक आने कवि जेकाँ रामलोचन जी तहिआ अनुभव कएने छलाह जे भावनाक सही व्याख्या क' सकै शब्द मे ओ सामर्थ्य नहि छैक आ निसबद्दताक अपन निश्चित अर्थ छैक । अपन आत्मीय लोक सभक नामे पत्र लिखबाक भाषा कवि बिसरि गेल छथि। कविता मे बहुत दिन धरि सिंगरहार, हीना, रजनीगंधा फूल सभक वर्णन होइत रहल । आजुक कवि क्षुधा-पिपासा-महामारी-अशिक्षा-अत्याचार-अनाचार सभक औषधिक रूप मे वर्ग संघर्षक पताका उठा कए विदा होइत अछि । पताका उठौने बाट पर चलैत कवि चारू दिस देखैत अछि जे समानधर्मा आ सहयात्री भेटत । मन, कर्म, वचन आ कागत पर लिखल शब्द सभ के कतहु जकरा लेल कोनो अन्तर नहि होय एहेन समानधर्मा आ सहयात्री ।

साहित्य रचनाक आधार पर इतिहासहंताक कवि कें असंख्य समानधर्मा आ सहयोगी भेटल होनि । मन, वचन आ कर्म सँ अपन रचनाक लग मे ठाढ़ होथि एहेन समानधर्मा जँ भेटलो होनि तँ आङुर पर गनल ।

बेताल कथा (मई १९८१) लेखक में कुमारेश काश्यप नाम अछि जे रामलोचन ठाकुर छथि। श्री हरिमोहन झा के समर्पित एहि पोथी मे सात टा रचना अछि तोता मैना संबाद (अथ कथा चमचा पुराण प्रसंग), लाल बुझक्कर (विद्यापतिक बर्खी), कुर्सी महात्म्य, विप्लव, ब्रह्मक श्राप, उत्तर महाभारत आ अमरावती उपकथा ।

समाज मे एहेन बहुत लोक अछि जकर सिद्धान्त तं सहजहिं रूप आ स्वरूप मे सेहो निरन्तर परिवर्तन होइत छै । एहेन लोक सभक कारण सामाजिक व्यवस्था आ सांस्कृतिक मूल्य ढनमना रहल अछि । रामलोचन ठाकुर कें एहि सँ क्षोभ होइत छनि जेना तहिआ हरिमोहन बाबू के भेल छलनि । क्षोभ कें हास्य व्यंग्य के रूप मे अंकित करब कठिन काज होइत छैक । क्षोभ के एहि रूपें सफलतापूर्वक अंकित कए हरिमोहन बाबू हास्य सम्राट बनला । 'बेताल कथा' हरिमोहन बाबूक रचना सभक समकक्ष तँ नहि मानल जा सकैछ किन्तु ओहि परम्परा कें अविरलता प्रदान करैत अछि । मई १९८१ क बाद बाद रामलोचन जी किछु आर एहेन रचना कएलनि जे दोसर संकलन में आओत।

नेना भुटका लेल साहित्य रचना आ बिसरल जाइत लोक साहित्यक यथासाध्य रक्षाक उद्देश्यें रामलोचन ठाकुर लिखित 'मैथिली लोक कथा' (अक्टूबर१९८३) मे कथा अछि हिरामनि सुग्गा, अबकी बेर फतंग, महाराजा विक्रमादित्य, गदहा खेने कोनो ने दोष, एकटा चिनमा खेलियै रओ भइया, काजरि, सदबा-बदबा, एकटा बुढ़िया रहए, एकटा गरीब बाभन रहथि, नारद मुनि आ साँप, लाल बुझक्कर जामुन अन्त न पावेउ, राभणो न तु रावण, मीतारे, ठठपाल, एकटा रहथि राजा, महाकाली ।

निष्ठा पूर्वक वर्ग संघर्षक झंडा उठौनिहार रामलोचन ठाकुर मन मे परम्पराक प्रति जे अनुराग छनि ततेक तथाकथित परम्परावादी सभ सँ किन्नहुं आशा नहि कैल जाए । हुनक व्यक्तिगत जीवन मे सेहो विद्रोह आ परम्पराक विवेकपूर्ण निर्वाह तेना सन्तुलित भए गेल अछि जकर अनुकरण सभ लेल संभव नहि । 'मैथिली लोक कथा' तकरे सामान्य प्रदर्श (Manifestation) मानि लेल जाए ।

परम्परा प्रेमक आर मधुर बानगी ठाढ़ करैत अछि 'माटि-पानिक गीत'। (अक्टूबर ८५) एहि मे किछु परम्परागत शैली आ किछु नव शैली मे रचित गीत अछि । एकाध

गीत मे प्रयोगक लक्षण भेटत । मैथिली मे अत्यल्प प्रचलित छन्द कुण्डलिया छन्द कवि कैं बड़ प्रिय । 'कह लोचन कविराय' शीर्षक सँ दस टा रचना ओहि छन्द मे अछि । अन्त मे पाँच टा दोहा दुपतिया रखने छथि।

रामलोचन ठेंकुर कैं यशस्वी गीतकार लोकनिक पतियानी मे देखब कोनो अलोचक के नहिं अरघतनि । एहि पोथिक गोटेक दर्जन गीत मे ओ सामर्थ्य छै ।

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया मे एकैस टा कविता अछि, रचनावधि १९७१-८४। ओना एहि कविता सभ मे समाजक प्रगति (दुर्गति) केर बैलेंसशीट प्रस्तुत करबाक प्रयास 'एहि संएतीस बर्ख मे' पुलिसक लाठी कतेक समधानल भेलैए, रोटी कतेक महग भेलैए, मजूरी कतेक सस्त भेलैए' आदि आदि ।

''अपूर्वा'' हुनक काव्य दृष्टि केर विविधता प्रकट करैत अछि । पहिने परम्पराक प्रति हुनक अगाध प्रेम, मातृभूमि आ मातृभाषा लेल अविचल भक्ति आ तकरे संग वैषम्य कैं प्रश्रय दैत व्यवस्थाक विरोध मुखरित अछि । विषय वस्तुक समानान्तर छन्द योजना पर हुनक अधिकार सहजहिं नकारल नहि जा सकैछ । अर्थात विद्रोह लेल विद्रोह नहि । ध्वंस लेल ध्वंस नहि । नव निर्माण लेल विद्रोह आ ध्वंस ।

- नवीन चौधरी

अनुक्रमणिका

देश वन्दना

जननी आ जन्मभूमि स्वर्ग सँ महान
जय-जय मम मातृभूमि शत-शत प्रणाम

मिथिला,तिरहुति, विदेह कत न तोर नाम
जकर स्मरण मात्रहि सँ पुलकित मन प्राण

तीर पर अवस्थित पुनि यज्ञ तीर-तीर
पावन एहि धरतीक तीर्थ गाम-गाम

लक्ष्मी के बास जतय खेत खरिहान
घर-घर मे सरस्वती गबै छथि साम

स्रष्टा जत पूजक आ पूजित हो सृष्टि
माटिक शिव बना पुनि प्रतिष्ठा क प्राण

महिमा गाबैछ जकर उपनिषद् पुराण
मिथिले मम मातृभूमि तिरहुति ललाम



स्मृति चित्र

१

पाद गणक महिमा करिअ नित नैमित्तिक गान
जनिक प्रसादातेँ बनल मैथिलि हमर महान
मैथिलि हमर महान कण्ठ सँ काव्य धरा-धरि
चर्यापद जनु स्रोत गोमुखी पावन सुरसरि
कह लोचन कविराय तेँ मान्य मनीषी पाद
नत मस्तक मैथिल सदा तुअ पद पंकज पाद

२

ज्योतिरीश्वरक ज्योति सँ ज्योतित अछि आकाश
मैथिलीक साहित्य के साक्षी अछि इतिहास
साक्षी अछि इतिहास प्रथम एहि नाट्यकार सँ
सकल पूर्व भारतक प्रथम एहि गद्यकार सँ
कह लोचन कविराय ज्योति वर्णरत्नाकरक
रहत सदा अम्लान नाम कवि ज्योतिरीश्वरक

३

डाक वचन अमृत बनल बसल लोक मन प्राण
आङन घर खरिहान धरि पढ़ुआ अपढ़ समान
पढ़ुआ अपढ़ समान महाकवि डाकक आदर
जे कोनहु हो काज डाक वचनेक समादर
कह लोचन कविराय अनमोल रत्न मिथिलाक
रहत सदा इतिहास मे अमर नाम कवि डाक

४

विद्यापति कविपति कहल कविवर गोविन्ददास
बाँकी किछु बहुतो कहल साक्षी अछि इतिहास
साक्षी अछि इतिहास लोक भाषा उत्थानक
प्रथम पुरुष विद्यापति नाम पश्चाते आनक
कह लोचन कविराय मातृभाषा हित परिचित
पावन पदावलिक सुरसरि सिरजल विद्यापति

५

नाटक मंचक क्षेत्र मे मल्लगणक अवदान
मल्ल काल पाओत सदा स्वर्ण युगक सम्मान
स्वर्ण युगक सम्मान मान्य सभ नाट्यकार के
विस्मृत जनिकर नाम ताहि सभ कलाकार के
कह लोचन कविराय मैथिली वा बंगालक मंच
सादर सुमिरन करत तेँ मल्लक नाटक मंच

६

चन्दा झा चाने बुझू निर्मल नवल प्रकाश
आलोकित अछि आ रहत मैथिलीक आकाश
मैथिलीक आकाश स्वयं विद्यापति जत रवि
मिथिला भाषामय रामायण चानक थिक छवि
कह लोचन कविराय आधुनिक युग निर्माता
अमर नाम मिथिलाक अमर गायक चन्दा झा

७

लालक कतय अभाव अछि मैथिलीक बहु लाल
एहने लालक मध्यमणि सम्मानित कवि लाल
सम्मानित कवि लाल दास भाषाक समर्पित
रामायण सन महाकाव्य मिथिला के अर्पित
कह लोचन कविराय कृत्ति चिर नूतन लालक
तहिना कालातीत नाम रहतै कवि लालक

८

कविशेखर द्विजवर कते कविवर सभहिक कृत्ति
बेर-बेर सादर करत सदा लोक आवृत्ति
सदा लोक आवृत्ति कृष्ण जन्मक मनबोधक
जनसीदन पुनि भुवन कृत्ति सबहिक थिक शोधक
कह लोचन कविराय मैथिली साहित्यिक छवि
चिर नूतन अम्लान जनिक बल सभ प्रणम्य कवि

९

कविवर सीताराम के कविता ललित ललाम
सरिपहुँ केहन विडम्बना लोक देल नहि मान
लोक देल नहि मान कहल केओ,लीखथि फकरा
आर प्रबुद्ध समाज कहय आलोचक तकरा
कह लोचन कविराय जनु सीतारामक नाम
मिथिला सुधी समाज मे कविवर सीताराम

१०

भोला तँ भोले छलाह कतबा कही कमाल
एक शब्द मे जौं कही मैथिलीक ओ लाल
मैथिलीक ओ लाल भाल-भूषण मिथिला के
बाधा-विघ्नक काल कएल जीवन्त शिला के
कह लोचन कविराय दधीचि बनल बंभोला
मैथिलीक बनि दास पूज्य मैथिल हित भोला

११

सौरभ सुमनक थोड़ नहि बान्हल लखन लकीर
सभ वैभव रहितो रहल बहुजन बनल फकीर
बहुजन बनल फकीर खेत खरिहान गाम घर
जानि अजानि न जानि किए अनठाओल कविवर
कह लोचन कविराय सुमन तैयो मम गौरव
मोहत नित नूतन मधुपक मन सुमनक सौरभ

१२

मधुपक मधु मधुमात्र नहि थिक ओ सुधा समान
आङन घर खरिहान हो अथवा धर्म-स्थान
अथवा धर्म-स्थान व्याप्त सभ ठाँ मधु गुञ्जन
पढ़ुआ अपढ़ समान करय सबहिक मन रञ्जन
कह लोचन कविराय अभाव न कहियो पुष्पक
चिर वसन्त उद्यान मैथिलिक गुञ्जन मधुपक

१३

किरण देल आलोक नव नव उष्मा नव रंग
योद्धा-बोद्धा मनीषी कृषक आर कवि संग
कृषक आर कवि संग सुशिक्षक परम सिनेही
भेल न थोड़ उमंग रहथु कतिऔल भले ही
कह लोचन कविराय किरण सन मात्र टा किरण
कर्मवीर धर्मपुरक काञ्चीनाथ झा किरण

१४

यात्रीक यात्रारम्भ सँ उपजल नव विश्वास
बलचनमा पारोक मन नवतुरियाक हुलास
नवतुरियाक हुलास परम सत्यक व्याख्याता
किन्तु मैथिलिक भाग्य सह्य नहि कएल विधाता
कह लोचन कविराय बनल नागार्जुन यात्री
अर्थ श्रेय पाथेय भाव नहि बूझल यात्री

१५

नायक जनगाथाक जे लगलनि ततबा नीक
छोड़ि लिखब खतियान ओ धयलनि गामक लीख
धयलनि गामक लीख गुफा गहवर सन्धानी
ब्रजकिशोर वर्मा मिथिलाक अमर सेनानी
कह लोचन कविराय लोक गाथा उन्नायक
मैथिलीक मणिपद्म स्वयं जनु गाथा नायक

१६

हरिमोहन हरिलेल मन हास्य-व्यंग के संग
कन्यादान द्विरागमन खट्टर कका तरंग
खट्टर कका तरंग रंगशालाक रंग मे
पढ़ुआ अपढ़ जुआन बूढ़ सभ सम उमंग मे
कह लोचन कविराय युग पुरुष युग मनमोहन
हास्य व्यंग्य सम्राट अमर स्रष्टा हरिमोहन

१७

आरसीक की आरसी माटिक माटिक दीप
गुण-ग्राहक संग्रह करए मोती खातिर सीप
मोती खातिर सीप सीप मे मोती रहइछ
पोथी माटिक दीप हृदय आलोकित करइछ
कह लोचन कविराय सूर्यमुखिक तुलना की
मैथिलीक उन्मेषक गायक अमर आरसी

१८

कवि साधक श्यामाक ओ अद्भुत ठेठक ठाठ
खुटिया धोती श्याम तनु सिनुरक ठोप ललाट
सिनुरक ठोप ललाट काव्य पाठक ओ क्षमता
मैथिलार्यगण के सम्बोधित क्रान्तिक कविता
कह लोचन कविराय हुनक ओ ओजस्वी छवि
सुकवि राघवाचार्य अमर मिथिलाक वीर कवि

१९

ललितक कथा व्यथा कहत आगामी इतिहास
प्रतिनिधि रमजानी कहत पृथ्वीपुत्र प्रकाश
पृथ्वी पुत्र प्रकाश कहत जा रहत मैथिली
ताधरि रहते नाम अमर जा रहत मैथिली
कह लोचन कविराय अमर शिल्पी जे ललितक
हमर स्मृति तर्पण टा ओहि युग पुरुष ललितक

२०

किसुन मैथिलिक ओ छला पण्डितजी मिथिलाक
रामकृष्ण संगम जेना कोशी ओ कमलाक
कोशी ओ कमलाक उपासक नव उन्मेषक
सत् हित जे साहित्य सदा तकरे परिवेशक
कह लोचन कविराय किसुन सन मात्र टा किसुन
बनल सुपौल सुतीर्थ मैथिलक पाबि कें किसुन

२१

राजकमल राजेकमल मैथिलिक वरद पूत
साहित्यक आकाश के नवल नक्षत्र निखुत
नवल नक्षत्र निखुत सुवासित स्वरगंधा सँ
आदि-कथा, आन्दोलन रूपी मकरन्दा सँ
कह लोचन कविराय चिर शाश्वत ललका पाग
बिसरि सकत की मैथिली मिथिला अप्पन राज

स्मृति चित्र

महामहो मुरलीधर रासबिहारिक कृत्ति ।
भुवन सराहय भवन टा कत जन देखय भित्ति ?

चिर नमस्य गिरिराज सन महत् जनिक व्यक्तित्व।
भाषाविद प्रियर्सनक अमर नाम कर्तित्व ।।

देव युगल आसाम के नहि केवल आसाम ।
किरतनियाँ नाटक सदा आदृत मिथिला धाम ।।

हरप्रसाद शास्त्रिक कथा सारस्वत सन्धान ।
बिसरि सकत की मैथिली ओ अमूल्य अवदान ।।

मित्र शारदाचरण जे जस्टिस पद प्रख्यात ।
शोध-साधना मैथिलिक इतिहासे विख्यात ।।

वाणी साधक सेन कुल भूषण चन्द्र दिनेश ।
कीर्ति कथा आलोकमय नहि सीमा नहि शेष ।।

नाथ नगेन्द्रो गुप्त नहि कीर्ति न कनियो थोड़ ।
मित्र-मजुमदारक पुनः जोड़ी छल बेजोड़ ।।

प्रबल पक्षधर मैथिलिक प्रखर जनिक व्यक्तित्व ।
भाषाऽचार्य सुनीति केर चिर अम्लान कृतित्व ।।

सुन्दर संयोगक कथा सुन्दर सुरभित वास ।
जीवन झा ज्योतित सदा साहित्यक आकाश ।।

रत्नक कतए अभाव अछि रत्नाकर के पास ।
मिथिला नाटक बानगी कृत रघुनन्दन दास ।।

चिन्निक लड्डु सन मधुर ईशनाथ के नाम ।
सुधी समाजो देल तैं सरस कविक सम्मान ॥

महाकाव्य कीचक-बधक अलंकार ओ छन्द ।
आकर्षित करते सदा तन्त्रनाथ नहि मन्द ॥

अणुक पता लागत जखन उनटाएब इतिहास ।
पाण्डे रामचरित्र कै मात्र नक्षत्रक आस ॥

करिकी कोइली रटैए चन्द्रभानु के नाम ।
औखन पाएब जाइ जौं विरल बिरौली गाम ॥

साहित्यक इतिहास लिखि बाबू श्री जयकान्त ।
मैथिलीक सम्मान हित लड़थि सदा अक्लान्त ॥

राधाकृष्णक संग मे भाषा-भू इतिहास ।
सार पुनः शारान्निधा अद्भुत अमिट प्रकाश ॥

रमाकान्त विरचित व्यथा काव्य ग्रन्थ अनमोल ।
जाति चेतना शून्य जे बूझि सकत की मोल ?

पुष्पांजलि-दोहावली सम श्यामा के नाम ।
पंडित कालीकान्त के तैओ श्यामा वाम ॥

उद्भव आर विकास मे राजेश्वरक निवास ।
छोट देह आत्मा महत् अद्भुत छल विश्वास ॥

भलमानुष सरिपहुँ छला योगाबाबू धन्य ।
कहिनी ओ कटु वाक्य कें कएल न कहिओ गण्य॥

भाषाविद् गोविन्द के सामा पौती हाथ ।
करता ओ रुक्मिणि हरण मद्धिम पड़ल बसात ॥

व्यास लीखि दू पत्र टा कएलनि बाजी मात ।
पीसि रहल छथि सुनै छी महाभारतक जाँत ॥

चन्द्रनाथ बान्हल मने ऋतुप्रियाक कर डोर ।
अमर भेला इतिहास मे पत्रकारिता थोड़ ॥

बिना प्रवासे प्रवासी साहित्यालंकार ।
अरुणिमाक आलोक मे घोषथि लङ-लकार ॥

जा मिथिला ता निश्चिते मधुश्रावणीक मोल ।
शिल्पी शैलेन्द्रमोहन निर्विवाद अनमोल ॥

फिल्म प्रकाशन योजना आर कते की प्लान ।
डॉ. बी. झाक लॉटरी असमय महाप्रयाण ॥

धीरेश्वर धीरेन्द्र बनि धयल जनकपुर धाम ।
ठुमकि बहथु कमला भने ओ नहि घुरता गाम ॥

माया मायानन्द के पाथर बनले मोम ।
गीजि गीत गीतल बनल भांगक लोटा होम ॥

सोम सोम नहि सोम सन निर्मल बनल प्रकाश ।
चरैवेति सतसइ सहज कालध्वनि विश्वास ॥

ए सी दीपक नाम संग कथा मातृवाणीक ।
पत्रकारिता जगत मे सरिपहुं बनल प्रतीक ॥

कृष्णकान्त जी मिश्र के वैदेही पदभाव ।
अलख जगाबथि एकसरे बाँकी पत्र प्रभाव ॥

पाथर जे पसिझैत अछि देखु कबिलपुर जाय ।
रामदेव कविऐल छथि अजगुत कहल न जाय॥

मौन प्रफुल्ल कुमार पुनि सिंह स्वभाव स्वतंत्र ।
बैसि आम्रपाली गुफा घोषथि लौकिक मंत्र ॥

कीर्ति कीर्तिनारायणक नहि सीमा सीमान्त ।
लिखता अगबे स्तवन ओ बनता कवि संभ्रान्त ॥

अन्तहीन आकाश के रचना कएलनि रेणु ।
दूध-फूल डाली सजा बजा रहल छथि वेणु ॥

धूमकेतु प्रतिभाक अछि अगुरबान प्रमाण ।
बाड़िक पटुआ तीत सन अवहेलित निज गाम ॥

नाचू हे पृथ्वी अहाँ जीवकान्त के वस्तु ।
धार मुक्त नहि होइत'छि नहि, कतहु नहि अस्तु ॥

कुँवरकान्त के सेहन्ता पुरत केना की जानि ।
मैथिलीक खरिहान मे बड़-बड़ पीबथि पानि ॥

हमरा लग रहबै अहां पुछने फिरथि प्रभास ।
कथा प्रभासक की कही भेला हतो प्रत्याश ॥

राजमोहनक मोह मे आरम्भक अछि अन्त ।
गलतीनामा जपै छथि कथा जगत के सन्त ॥

गुंजन नहि गंगेश ओ आइ भोर के आश ।
नाम उचितवक्ता हिनक लोक सुनू नवभास ॥

सोनदाइक चिट्ठी थिकनि गोपेशक खतिआन ।
बौंसथि प्रिया प्रभावती आब उचित नहि मान ॥

अर्थ तदर्थक के कहत बिना विहंगम दृष्टि ।
प्रौढ़ पटनियाँ प्रवासी अगस्त्यायनी सृष्टि ॥

बुद्धिनाथ मिश्रक सकल रचना अर्थ प्रधान ।
हिन्दी मे तें गबै छथि सोहर आ समदाउन ॥

हंसराज कवि अनेरे किन्तु न छोट कपार ।
जे किने से ल'सतज्जा वैदेहिक दरबार ॥

चक्र तेज तर्रार छल धनचक्रक विश्वास ।
बिझा गेल सहजे कोना व्यंग हास परिहास ॥

बभनी मे आनन्द सँ छला कमल आनन्द ।
सीमा पर जयनगर मे 'पाथ्या' ओ नहि मन्द ॥

बिनु तेलक जरता कते टेमी बनल प्रदीप ।
राति नमरले जाइत अछि सोचथि भोर समीप ॥

कथा व्यथा गौरीक सुनि व्यथित बालगोविन्द ।
बेचन बेचल घराड़ी घोषि रहल जय हिन्द ॥

बटुक भाइ सरिपहुँ बटुक हेता केना समर्थ ।
गमला केर गुलाब मे ताकथि काव्यक अर्थ ॥

संक्रान्तिक कवि तकै छथि मौसम एबाक बाट ।
एहना स्थिति मे कही की बिनोद के ठाठ ॥

कुलानन्द कवि लग छलनि कहबा लै बड़ बात ।
किन्तु त्रिकाल जे नशा संग न छोड़य तात ॥

भूमिकाक ओरिआन नहि पोथी कोना छपाउ ।
दोषी लिखथि भाइ ने रस्ता कोनो धराउ ॥

वीणा के धूरी बना भीमनाथ कविराइ ।
कहथि की फुरैए की नहि विविधा मे बौआइ ॥

मोमबत्ती ल तकै-ए शाकी मे मिस लाल ।
वीरेन्दर संतोषपुर पूजन भजन त्रिकाल ।।

गंगा के कुल्टा बना मंत्रेश्वरक प्रसिद्धि ।
नाट्यमंच पर तकै छथि आइ ए एस के सिद्धि।।

गुण अनुरूपे नाम धरि यादव चन्द्र सुभाष ।
घरदेखिया के बाद सँ छोड़थि दीर्घ निसास ।।

अपन समदिया दिया किछु पठा समाद सुकान्त।
मैथिलीक साहित्य सँ चूप-चाप निष्क्रान्त ।।

बेचि घराड़ी बसि गेला बजबज जाय सुशील ।
संग गामवालीक ओ सानथि चिक्कस गील ।।

यद्यपि कविता संभवा महाप्रकाशक लेल ।
राखता सेज विभाजिते महा महो ढहलेल ।।

कनिञा पुतरा शेष नञि शेष किन्तु पाथेय ।
गुणनाथक मधुयामिनी आजुक लोकक नेह ।।

लिली रे, उषा किरण, शान्ति सुमन नहि थोड़ ।
नीता पुनि शेफालिका पसरल नवल इजोर ।।

लिखि मीता के नाम ओ पाबि न सकल जबाव।
जा कुणाल पटना बसल बुझल भंगिमा भाव ।।

अग्निपुष्प पटना गेला आगि निपत्ता भेल ।
सहसबाहु के कल्पना कागत धरि रहि गेल ।।

नसबन्दी के डर सँ तेजि मलंगिया गाम ।
बारहमासा गबै छथि बैसल धनुषा धाम ।।

नाटक कविता कलकत्ते स्वयं हैदराबाद ।
नचिकेता छथि कए रहल क ख केर अनुवाद ।।

कृष्ण कृष्ण रटना रटथि हरेकृष्ण दिनराति ।
हमरा लेखे धन्न सन अपने ने बौआथि ।।

भेल रवीन्द्र महेन्द्र मे जहिये भिन्न भिनाउज ।
अन्त एक अध्याय के आब करैछथि पाउज ।।

गलजोड़ी नहि करथि ओ कहथि सरस कविराइ ।
मटोमाठ बनि मंच पर गाबै छथि महराइ ।।

छोड़ल जे आनन्द के जोड़ल भारद्वाज ।
तोड़ जोड़ मे अनवरत मोहन भारद्वाज।।

पानापुर के पीर बनि श्री फजलुर्रहमान ।
काव्य चिबाबथि राति दिन जनु हो मगही पान ।।

भत्ता पर आलोचना लिखता रमण महान ।
मार्ग हिनक अप्रीतिकर चाहै छथि सम्मान ।।

मित प्रिय भाषी पक्व पुनि यद्यपि नाम नवीन।
बाट बटोही के देखा बजा रहल छथि वीण ।।

हाँकथि कौआ एकसरे रानी विभा विहार ।
अजय विजय पाबथु भने दर्शन दूर प्रसार ।।

अर्जुनलालक संग मे राजनन्दनक नाम ।
कर्णामृत गुंजत सदा शहर आर पुनि ग्राम ।।

पंचामृत ल' हाथ मे पंचानन बौआथि ।
मैथिलीक भाग्ये तेहन अपनहु दूर पड़ाथि ॥

उपन्यास वा हो कथा अथवा नाटक रंग ।
विसूवियस प्रदीप के थोड़ न कतहु उमंग ॥

सुनह वियोगी कान दय भलमानुष के बात ।
मैथिलीक साहित्य मे सब सँ पैघ गतात ॥

लय समाद मिथिलाक ओ कलकत्ता सँ गाम ।
आन्दोलन पुनि प्रकाशन कमलेशक अछि नाम ॥

संच मंच भ' मंच तजि लेखन करथि रमेश ।
गीत-गजल-कविता-कथा नित्त नूतन संदेश ॥

कालकंठ ल' मंच पर आयल छथि चन्द्रेश ।
ताकि रहल छथि राति दिन आलोचकक उदेश ॥

डेगा डेगी दैत छथि कवि विभूति आनन्द ।
काव्य छोड़ि गीजथि गजल गाम पड़ल अछि मन्द ॥

परती तोड़थि व्यस्त भए ठाकुर श्री अरविन्द ।
घर घूरि नारायणजी गाबि रहल छथि निन्द ॥

कानन किसुन कुटीर सन साधन रत केदार ।
टूटत नहिं संकल्प ई शब्द लेत आकार ॥

कमला के कलनाद आ सुस्मिताक स्मित हास ।
सुन्दर सुखद भविष्य के जनमाबथ विश्वास ॥

चित्र-विचित्र -१

लोक झखैए देश के महगी छुअय आकाश
पड़ा रहल-ए गरीबी नेता केर उल्लास
नेता केर उल्लास पोन पर द' रहला-ए ताल
दाम बढ़ा क' वस्तु के सरिपहुँ केलनि कमाल
कह लोचन कविराय देश भरि व्यापल शोक
शनिक दृष्टि पड़ल अइ भरिसक सोचि रहल लोक

२

बेकारी उपहार लए आएल अछि सरकार
युवा वर्ष पर युवा लए सजने कञ्चन थार
सजने कञ्चन थार प्रगति करबा लए देशक
फिरीसान अइ आन' लए तकनीक विदेशक
कह लोचन कविराय तर्क ई थिक सरकारी
देश न आगू बढ़त बढ़त नहि जा' बेकारी

३

जनता मास एगारह बारह बजा गेल पुनि
बुढ़िया फुसिक झगड़ा सगरो बझा गेल पुनि
बझा गेल पुनि अपटी खेंते मुइल अनेको
मण्डल आर कमण्डल मे पुनि बटल अनेको
कह लोचन कविराय देश सँ बढ़ि कए सत्ता
जानि ने कहिया बूझत मर्म चुनावक जनता

४

जनता ले ई देल अछि नव वर्खक उपहार
कोयला चाउर गहूम के दाम बढ़ा सरकार
दाम बढ़ा सरकार बन्द केलक कत गाड़ी
विदानीति के तहत बन्द उद्यम सरकारी
कह लोचन कविराय देश के भाग्य विधाता
की की खेल देखौत जीत जौं देखत जनता

५

अण्डा मुर्गी खाउ सब भातक की दरकार
पेट भरत तागति बढ़त कहइत अछि सरकार
कहइत अछि सरकार करू सब मुर्गीपालन
रहत न केओ बेकार हैत सब कष्ट निवारण
कह लोचन कविराय देश चलबा लए डण्डा
तहिना आवश्यक विकास लए मुर्गी अण्डा

६

गणतंत्रक खरिहान मे पसरल गूँहे-गूँह
चोर बजै-ए जोर सँ साधुक जाबल मूँह
साधुक जाबल मूँह चतुर्दिक गुण्डागर्दी
रक्षक भक्षक भेल पहिर कानूनक वर्दी
कह लोचन कविराय राज ई लाठीतंत्रक
लल्लू पप्पू चला रहल गाड़ी गणतंत्रक

७

जनता जनता जय जनता सौंसे छल गर्द मिसान
जनता बनल महन्थ देश धरि बनले रहल मसान
बनले रहल मसान चतुर्दिक ओहिना हाहाकार
होयत कम की खाक न रहले विपतिक पारावार
कह लोचन कविराय बदललै मात्र रंग टा
टोपी धरि छै उएह बुझत आबहु की जनता

८

माइक हत्या करै अछि कण्ठ मोकि कए पूत
श्राद्ध करत से वैदिकी कनियो नहि अजगूत
कनियो नहि अजगूत करए पुनि भोज जबारी
गायक बदला दान देल जाइत अछि पारी
कह लोचन कविराय विलक्षण बुद्धि जगाइक
पाचक भेल मधाइ सधाओल कर्जा माइक

९

आइ एम एफ केर कर्ज थिक एक दवा सौ मर्ज
बरू बेचि स्वाधीनता प्राप्त करब तैं फर्ज
प्राप्त करब तैं फर्ज अर्ज ई आइ समय के
समाजवादक तर्ज उत्स क्षमताक उदय के
कह लोचन कविराय ओ महाशत्रु देश के
जे करैत'छि निन्दा कर्जक आइ एम एफ के

१०

सरकारी फरमान थिक श्रमिक मजूरक नाम
ई उत्पादन वर्ष थिक सुनू फोलि सब कान
सुनू फोलि सब कान न बिसरू एसमा नासा
मुँह जाबि करू काज न हो अधिकार तमासा
कह लोचन कविराय श्रमिक काजक अधिकारी
लाभक मालिक मात्र घोषणा थिक सरकारी

११

तेल इजोतक उत्स थिक तेल शक्ति के खान
तेलक बल डिबिया जरए तेलहि उड़ए विमान
तेलहि उड़ए विमान तेल बल मंत्रिक आसन
तें जनसेवक राज तेल पर कएलक राशन
कह लोचन कविराय रूस सँ कएल गेल-ए मेल
बदला मे द चाउर गरीबक लेल अबै-ए तेल

१२

चमचा गुण के खान थिक कहइछ वेद पुराण
जकरा चमचा छै जते से ततबेक महान
से ततबेक महान राजनेता युगचेता
प्रगतिशील कवि कथाकार शिल्पी अभिनेता
कह लोचन कविराय करए सब संभव चमचा
भारत भाग्य विधाता जय जय जय हे चमचा

१४

बाड़िक पटुआ तीत आ हो बाजारक मीठ
कुहरि रहलि तें मैथिली डनिआ टेरए गीत
डनिआ टेरए गीत नचैए पश्चिम गामक
चाम दाम सँ मोहि पूत सभ मिथिला धामक
कह लोचन कविराय कलंकक लेपल कारिख
मैथिल युवजन मानि मैथिली पटुआ बाड़िक

१५

दूरक ढोल सोहाओन कहबी छैक पुरान
किन्तु मात्र कहबीए नहि सुनिओ रहलौं कान
सुनिओ रहलों कान आँखि सँ देखि रहल छी
मैथिलीक दुर्दशा हाल मिथिलाक कहब की
कह लोचन कविराय विवेक एहन नवतूरक
निश्चित पतनक मूल प्रगति बात तँ दूरक



चित्र-विचित्र- २

उत्तम आइ न चास अइ आर न मध्यम वाणि ।
सर्वोत्तम थिक चाकरी भीखो मे नहि ग्लानि ॥
अँकुरी टेढ़ कहैछ जे करू थिक मिरचाइ ।
सुच्चा मैथिल थिका ओ बुझी चौसठि पाइ ॥
गाम नोंत नहि बेलाही नोंत बजै-ए लोक ।
बेर पड़ै अपना जखन सैह करै सभ लोक ॥
बनै भड़ारी काग जौं हो गूँहे गुँहटार ।
भाइ-भाइ मे शत्रुता पुजा रहल आइ सार ॥
नाक काटि अप्पन करए परक यात्रा सिद्ध ।
विख्याता भुवनत्रयम् मिथिला अइ परसिद्ध ॥
फाड़थि नहि जे गजभरि हारथि थानक थान ।
बताह ओझा गाम लए ओझा लेखें गाम ॥
समरथ ले बनि जाइए अभिशापो आशीष ।
इन्द्रक अंग सहस्त्र भग सरिपहुँ बनल प्रतीक ॥
राजनीति सँ नीति के कहिओ भेल न मेल ।
विजयश्री तेँ पार्थ लए कर्ण पराजित भेल ॥
एक्वैसम शताब्दी बनल दौलताबाद ।
अर्थी देशक बढ़ि रहल गद्दी धरि आबाद ॥
रक्षक हो जों मूर्ख तेँ साबुत रहए न नाक ।
राजा बानर के कथा श्रद्धा मोन रखबाक ॥
ढन ढन बाजए मेघ जैं पानिक आशा व्यर्थ ।
भाषण-भूषण भाँट के काजक नहि सामर्थ ॥
हाथी पाँक फँसैत अछि गीदड़ ठोकए ताल ।
लोक बली नहि होइत अछि बली होइत अछिकाल॥

वेश्या विधवा होए नहि श्वान न मरए उपास ।
मरए बिना आहार के बाघ खाए नहि घास ॥
मान लेल मानी मरए पेटुक पेटे जान ।
गिद्ध उड़ैछ अकाश मे तेँ की हंस समान ॥
चालनि दूसए सूप कें जकरा भूर हजार ।
पोथी के नहि मान अछि थोथी चलए बजार ॥
खान-पान-परिधान सँ चीन्हल जाए न लोक ।
परिचय थिक व्यवहार टा पैघ छोट वा लोक ॥
बिनु पढ़ने विद्या विषम बूढक बहु जुआन ।
विषम अनाड़ी डाक्टर तहिना पूत अकान ॥
कान छैक पर सोन नहि सोन छैक नहि कान ।
वाणिक पूत झखैत छथि उल्लू लक्ष्मीवान ॥
अस्सी योजन गिद्ध के सुझइ लेकिन मऽर ।
एहेन गुणों तेँ थिक अशुभ मानी सदिखन डऽर ॥
टेंगरा-पोठी चालि पर रहुए मारल जाए ।
गदहा खाए जजाति आ धोबिक सिर बिसाए ॥
बुड़िबक भाखए एक ठाँ आ चलाक ठाँ तीन ।
लोचन आखर टा भनथि बेसी कहथि प्रवीण ॥
जानए ढोंढ़क मंत्र नहि दैछ दराघहि हाथ ।
लोचन लखि सब गुप्प छथि समय-समय के बात॥
बुड़िबकहो बेटा बनए टका पाबि बुधियार ।
सिट्ठी जानु कुसियार के छुच्छ बुद्धि बेकार ॥
बेङ जतए शास्त्रज्ञ हो कौआ संगीतज्ञ ।
निर्णायक हो मुदुस्सा बूड़ि ततए मर्मज्ञ ॥
विद्यापति केर पर्व मे विद्यापति टा बाद ।
सभ अपैत पति मंच पर व्यर्थक वाद विवाद ॥

चेत कबड्डी -१

चेत कबड्डी आबै छी
तोरा लए किछु लाबै छी
जतए बहै छै गंगा कमला
तकरे गीत सुनाबै छी।

जाहि माटि सँ जनमलि सीता
सएह हमर ई धरती
याज्ञवल्क्य, गौतम कपील के
भूमि रहत नहि परती
सुग्गा शास्त्रक गप्प करै छल
तकरे गीत सुनाबै छी ॥

ई लोरिक सलहेसक धरती
ई शिवसिंहक धाम छइ
महादेव चाकर बनि अएला
मिथिला देश महान छइ
जा धरि चान सूरूज ता रहतै
सएह शपथ दोहराबै छी॥



चेत कबड्डी - २

चेत कबड्डी रमना
सबहक एक्कहि अङ्ना
सब अपनहि केओ नहि अदना
माएक सन्तति छोट पैघ के
के अछोप के बभना ॥

छोट पैघ कहि झगड़ लगाबए
थिक ओ सत्यानाशी
कान ने कखनो दिहें तों सभ
सुन बेचन सुन काशी
फुटने घर गमारो लूटै
रखिहें मन मनरखना ॥

एक माए के कए टा सन्तति
केओ गोरे केओ कारी
केओ पढ़बा मे महाचन्सगर
केओ भुसकौलक टारी
माइक सिनेह समाने सभ लए
आर समाने वेदना ॥



हुक्का लोली

हुक्का लोली लोली, लोलही के लोल जरए
पसरल अन्हार ऊक फेरि क' भगाउ सभ
चहुदिस इजोत बढ़ए आर बढ़ए आर बढ़ए ॥

अशिक्षा अज्ञानताक लाश जरए
सुशिक्षा आ ज्ञान के प्रकाश बढ़ए
गली-गली गाम गाम देश आर विश्व मे
लोकक विश्वास आर आश बढ़ए आर बढ़ए ॥

आलस विभेद कलह द्वेष जरए
बुद्धि आ विवेक शान्ति स्नेह बढ़ए
गली-गली गाम-गाम देश आर विश्व मे
प्रगतिक पथ बढ़ए लोक आर बढ़ए आर बढ़ए ॥

धरतीक सिङार बढए आर बढ़ए
अकासक प्रकाश बढ़ए आर बढ़ए
गली-गलीं गाम-गाम देश आर विश्व मे
मिथिलाक मान बढ़ए आर बढ़ए आर बढ़ए ॥



दीप जराउ

जगमग जगमग दीप जराउ
दीपावली पर्व आनन्दक
हिलि-मिलि कए आनन्द मनाउ ॥

अशुभ शक्ति पर शुभ शक्तिक ई
विजय पर्व से राखी मोन
नाची गाबी किन्तु रही सवधान
ने घटि पाबए किछु अघटन
तखनहि शुभ दीपावलीक
सार्थकता थिक से जुनि बिसराउ ॥

आलोक ई पर्व थिकै तें
आइ अन्धकारक हो नाश
मात्र घरे बाहर टा नहि
अन्तर्तम धरि हो पूर्ण प्रकाश
नव आशा विश्वासक संग
आलोक पर्व सोल्लास मनाउ
जगमग जगमग दीप जराउ ॥



अटकन मटकन

अटकन मटकन दहिया चटकन
बजै छौ हिन्दी त' मार दू चटकन
मिथिला मे रहि क' हिन्दी बजै छौ
खा तोरे अन्न अपमानो करै छौ
सहै चुपचाप लगौ लाजो ने कनिओ
गरदनि पकड़ि क' लगा दही पटकन

बिनु राज्य मिथिला शिथिल भेल रहबें
भाषा विहीन भेल बौके तों मरबें
माइक ई लाज काज तोरे से जानि ले
जाति पाति भेद बिसरि आबो तैं बढवें
आइ नहि सिङ्गार गीत प्रीतक प्रयोजन छै
रणचण्डीक आह्वान करै मनेमन



उठ उठ रओ बौआ

उठ उठ रओ बौआ ने धोकरी छौ ढौआ
बाप छथुन नौकरी माय असगरुआ
बात कने बूझ जूनि हो तों अबूझ
देख काँव काँव करै कार कौआ

बासि भात खा कने खेतो सं भ' आउ
डिम्ही उपाड़ै चिड़ै हारि होरि क' आउ
आबि फेर भात खा स्कूल चलि जाउ
आहाँक फीसो लए राखल रुपैया

टिफिन मे दौड़ि अहाँ डाकघर जाएब कने
चिट्ठी देबनि बाबू कें खाम लेने आएब कने
नीक होइत अपने जं गाम रहथि सबें मे
काजे ई ठाढ़ भेलै झगड़ा लगौआ

काल्हि जनगणना थिक गामे पर रहब
ठीक ठीक लिखाएब कने जेना जेना कहब
माइक जे भाषा से मैथिली लिखाएब
देखब हिन्दी ने लिखए मुझौसा



झिझिर कोना

झिझिर कोना झिझिर कोना कोन कोना जाउ
मिथिला के आङन मे सबतरि खेलाउ
उत्तर हिमालय आ दक्षिण मे गंगा छइ
कोशी आ गंडक मे चुभकू नहाउ

उत्तर आ दक्षिण के भेद बिसराउ
मिथिला के सन्तति छी मैथिल कहाउ
कान्ह सँ कान्ह जोड़ि जाति-पाति आरि तोड़ि
मिथिला के माटि उठा माथ सँ लगाउ

माय मातृभूमि मातृभाषा महान
कखनो न होमए एकर अपमान
माइक जे बोल जुनि बाजइ मे लाज करी
अपने बाजू आ अनको सिखाउ

राखू नमस्कार कोठी के कान्ह
चीन्हल ने जाएत के अप्पन के आन
भेंट जखन होइ वा जाए लगै छी
'जय मैथिली' केर आदत लगाउ



करिया झुम्मरि

करिया झुम्मरि खेलै छी
ढील पटापट मारै छी
लीख पटापट मारै छी
शोणित पीबै जे मनुक्ख के
तकरे मारै जारै छी

एक्के धरती सभतरि बहिना
बाँटल कहाँ अकाश छइ
एक्के चान सुरूज छै तहिना
एक्के बहै बसात छै
भेद - भाद के बात करै जे
तकरे मारै जारै छी

ईर्षा - द्वेष हटाबै छी
घृणा विभेद मेटाबै छी
बुद्धि विवेकक दीप लेसि हम
प्रेमक ज्योति पसारै छी
करिया झुम्मरि खेलै छी



फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर

बिढ़नी कटलकौ तुम्मा फुलेलकौ
फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर

पांच बरख पर आबौ पचहिया
फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर

तोरे घर मे छता लगेलकौ
फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर

भाइ भाइ मे झगड़ लगेलकौ
फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर

बिढ़नी कटलकौ तुम्मा फुलेलकौ
फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर

कतए पड़ेबें पाछु ने छोड़तौ
फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर

ढेप - चेप सं काज न चलतौ
फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर

लेस उकारी दही धुकारी
फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर

बिढ़नी कटलकौ तुम्मा फुलेलकौ
फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर

४४

आम छू अमरोरा छू

आम छू अमरोरा छू
तीमन छू तिलकोरा छू
सावधान तों रहिहें बौआ
देखिहें लागौ न हिन्दीक लू

मैथिली बाजू पढ़ू लिखू
हिन्दी फिन्दी कात करू
छी मैथिल मिथिला के बासी
से जुनि कौखन बिसरू

शहर जाउ व्यवसाय करू
टाका चाही आय करू
बिसरी जुनि माटिक महिमा के
ओही पर सब लुरू खुरू

शूट बूट हैटो पहिरू
नव युग के संग अहूँ बढ़ू
हो अपमान ने मिरजै पागक
अपन सभ्यता जुनि बिसरू



छै तकरे इतिहास

तरुआ तिलकोर कहू ककरा लगै न नीक
अनसोहाँत ककरा लगै कोबर घर केर गीत

मुदा मात्र टा नीक सँ होएत की उपलब्ध
लोक नपुंसक के कहू, की करतै प्रारब्ध

पुरुष सिंह निश्चित सकए तोड़ि अकासक चान
पुनि दुर्लभ एहि जगत मे तकरा हित की आन

मरिओ अमर बनैत अछि कीर्तिक संग महान
उद्यमहीन मनुक्ख के बचै न नाम निशान

"दिअ दिअ" टा मात्र सँ भेटए नहि अधिकार
बचलो टा बुरि जाइ छै सएह थिकै संसार

हाथ पसारल बाट पर मरए हजारो लोक
कुकुर बिलाड़िक मृत्यु पर के मनबै छै शोक

हाथ बढ़ा जे ल' सकए छै तकरे इतिहास
जागल सदा सतर्क जे नहि छै तकर विनाश



उड़ी गोटी मोर पचास

सोमन कएलनि बी ए पास
डोमन मैट्रिक छूरा छाप
सोमन आइ कटै छथि घास
उड़ी गोटी मोर पचास

डोमन सभ दिन पहिरल सूट
जुत्ता छूटल भ' गेल बूट
धोती कुर्ता कएल निधास
उड़ी गोटी मोर पचास

से पहिरै छथि खद्धर धोती
कुर्ता ऊपर खजबा टोपी
पटना दिल्ली रचबथि रास
उड़ी गोटी मोर पचास

डोमन जानथि सबटा टिक्स
आइ करै छथि पालिटिक्स
साले साल बढ़ै छनि चास
उड़ी गोटी मोर पचास

बापक छलनि सोझ नहि चार
ओ चढ़ैत छथि मोटर कार
पटना दिल्ली मे घरबास
उड्डी गोटी मोर पचास

पूत पढ़ै छनि तौं के "तुम"
नाङरि कें ओ कहता "दुम"
"मम्मी" कहि माइक उपहास
उड्डी गोटी मोर पचास

कहियौ कते पैघ छै खिस्सा
फेरो कहियौ बाँकी हिस्सा
की रओ अकबर? की कैलाश?
उड्डी गोटी मोर पचास



ताक धिना धिन

ताक धिना धिन ता धिन ता
धिन ता ता धिन धिन धिन ता
आइ सुनै जो नव खिस्सा
ताक धिना धिन ता धिन ता

भदबरिया बेङक खिस्सा
जे सालो भरि रहय निपत्ता
ढङरय जोरगर होइतहि बरखा
ढङरय जेना चुनावक नेता
धिन ता ता धिन धिन धिन ता

छड़पए कूदए करए कमाल
बलगरहा कै बाजी लाल
फानि चढ़ैए अबलाहा पर
गाबए कों काँ धिन धिन ता
ताक धिना धिन ता धिन ता

नकसक नकसक बुड़लौ भाइ
तरका कानए पी पी पानि
मओज करंत कहए ऊपरका
कों काँ कों काँ धिन धिन ता
ताक धिना धिन ता धिन ता

हम्मर खिस्सा एतबहि टा
जे बुझलें से हाथ उठा
धिन ता ता धिन धिन धिन ता
ताक धिना धिन ता धिन ता

हाथ उठा कए बाजल बंठा
पाओज करतं आजुक नेता
नकसक नकसक मे जनता
कों का कों का धिन धिन ता
ताक धिना धिन ता धिन ता



देश महान छै

अपाटक के देश हिन्दुस्तान छइ
आर जे किछु हो मगर महान छइ

बार वधु अइ एतय पटरानी बनल
कुल वधू कलपैत छै वनवास मे
आइ भडुआ पर एतए अभिमान छै

जतए कर्जे पर चलै सरकार छइ
शक्तिशाली हाथ सब बेकार छइ
देश बढ़िते जा रहल आगू मगर
देश वासी पंगु बिनु आहार छइ
बचल हाड़ो धरि ने साबुत राष्ट्र के
की हेतै,साबुत बचल तं शान छइ

गीध्-गीदड़ मना रहलै महोत्सव
देश के सेवक बनल जल्लाद छइ
नाक जुनि सिकुड़ी सड़ाँध एतए कहाँ
बीस सूत्री इत्र के पैगाम छइ
ठीक सँ देखू श्मशान न ई थिकै
अरे एकरे नाम हिन्दुस्तान छइ

की कहल? कुकुर जेना भुकैत छइ
अरे ई त जागरण के गान छै
आर ई सभ श्वान नहि, गायक लोकनि
राष्ट्र नायक के गवै छथि आरती
बात भनहि विचित्र हो छी खासियत
तखन ने ई देश हिन्दुस्तान छइ

मिथिलाक वसन्त

तीन कात मे नदिया रे नदिया
उत्तर दिश पहाड़े हो
बिराजै माझे
रामा हमरो मिथिला देश हो
बिराजै माझे
तीन लोक मे सुन्नर मिथिला
पावन ओ मनभावन हो
लोभाओन लागे
रामा एलै मास फगुनमे हो
लोभाओन लागे
तीसी जे फुलेलइ रामा
सरिसो जे फुलेलइ हो
फुलाइए गेलइ
रामा वन के वनफुलवा
फुलाइए गेलइ
सजल धजल पिरथी
लागइ नव कनिञे हो
अबैया भेलइ
रामा पहुना राज वसन्तक जनु
अबैया भेलइ
छीटइ अतर बसात हुलसि कए
बेनिया जनु डोलाबइ हो
अलापै लगलइ
रामा कोइली कनियाँ परिछन गीत
अलापै लगलइ

देश-दशा

की भेलै किए भेलै
भैया ई केना भेलै
तीनू भुवनक परसिद्ध मिथिला
आइ किए एना भेलै
आइ किए एना भेलै
आइ किए एना भेलै
बल बुद्धि विद्या किछु ने रहलै
सभ कत्त हेरा गेलै
जकर माटि सँ जनमलि सीता
अहिलाक शाप मेटा गेलै
देह अछैत विदेह कहेलकै
से परताप कहाँ गेलै
से परताप कहाँ गेलै
से परताप कहाँ गेलै
सुग्गो शास्त्रक गप्प करै छल
से परताप कहाँ गेलै
ओ शिवसिंह सलहेस कहाँ छइ
विद्यापति कहाँ गेलै
नढ़ेया कूकुर तीन कोटि छइ
सिंहक नाम बिला गेलै
सिंहक नाम बिला गेलै
सिंहक नाम बिला गेलै
ठोहि पारि कै कनइ मैथिली
की छलै आ की भेलै

मिथिलाक महिमा

नव साहस नव शक्ति लए
देशक पुनरुत्थान

तेजथु अलस विलासिता
मिथिला के सन्तान

माटि मिथिलाक थिक ई महान
ज्ञानक अभ्युत्थान एतहि सँ
अछि इतिहास प्रमाण

धन-बल-विद्या-बुद्धि एहन कत
भूमि जगत मे आन

एकरे सिया धिया के बल पर
राम बनल भगवान

नहि केओ छोट, पैघ नहि केओ छथि
माइक सभ सन्तान

भेद भाव तजि बढ़थु संग मिलि
मिला कान्ह सँ कान्ह



निर्माण करब

हम नव मिथिला निर्माण करब
नव साहस अछि नव शक्ति हमर
नव युग के प्रति नव भक्ति हमर
जड़ता निर्धनता जतए न हो
बस एकमात्र नव लक्ष्य हमर
ई विसम विषाक्त समाज मेटा
हम नव समाज निर्माण करब
हम मिथिलावासी छी मैथिल
नहि छोट पैध माझिल साझिल
अछि माटि - पानि - भाषा एक्कहि
रौदी - दाही मे सब शामिल
मा मैथिलीक कल्याण कार्य
हम मिला कान्ह सँ कान्ह चलब
राजा शिव सिंह सलहेस जतए
विद्यापति गोविन्द चन्द्र जतए
मंडन कपील गौतम उदयन
सीता, मैत्रेयी आर कतए
एहि पावन भूमिक रक्षा हित
नव मान - चित्र निर्माण करब
दुश्मन विशाल गजराजक सम
केहरि शिशु की भय तकर करत
हिमगिरि महान हमरे प्रतीक
जँ बढ़ब - बढ़ब नहि पाछु हँटब
गंगा समान हम शान्त
प्रलय मे हमही कौशिक रूप धरब

इतिहास युग नवीन के

मिथिलाक नव जवान
मा मैथिलीक शान

मिथिलाक माटि माथ लगा मैथिली कहै
इतिहास युग नवीन के नवीन तों गढ़ै
सभ भेद-भाव आलस अभिमान तजि बढ़ै ॥

शिवसिंह ओ सलहेस गोरैया के सुमरि चल
गौतम कपील मण्डन उदयन के सुमरि चल
कवि कोकिल, वात्स्यायन वाचस्पतिक घर
गोनू मदन ओ शंकर इतिहास छौ अमर
सीताक संग भारतीक ज्ञान ल' बढ़ै ॥

स्त्री-पुरुष जवान-बूढ़-बच्चा सभ चल
लाठी गड़ाँस भाला मे शक्ति छै प्रबल
चूड़ी बजैत झन - झन नव चेतनाक स्वर
''जय मैथिली'' क नारा दए वज्र सन प्रबल
पटना दे पाटि दिल्ली धरि डगमगा पड़ै ॥



क्रान्तिक आह्वान

क्रान्तिक आह्वान थिक शान्तिक सम्मान हेतु
आँखि जे देखाबौ त आँखि दूनू फोड़ि दे
गारि जे पढ़ौ त दाँत बत्तीसो तोड़ि दे

गरदनि दबा दे जँ खखास करौ सीमा पर
बढ़बौ जँ पाएर तँ बजारि डाँर तोड़ि दे

छाती देखाबौ बनि हाथी करकड़ा दे हाड़
आङुर देखाबौ तँ गट्टा उपाड़ि दे

मैथिल सन्तान शपथ माइक छौ तोरा आइ
भाषाक शत्रु केर भूषा उतारि दे

शक्तिए थिक मूल मंत्र मानव विकास के
जागल के नहि विनाश उक्ति इतिहास के

माय-मातृभूमि-मातृभाषा सर्वोपरि थिक
जे नहि बुझैछ पात्र से थिक उपहास के

अप्पन सम्मान चाही आनक सम्मान हेतु
क्रान्तिक आह्वान थिक शान्तिक सम्मान हेतु॥



हम मिथिलावासी

हम मिथिला वासी
हम छी सदेह तैयो विदेह
हम सदा गृही वनवासी
हम मिथिलावासी

हमरे शिर राजमुकुट कर हरक लागनि
हमरे ठाँ होइछ गाछ वृक्ष पशु,
चास बास केर पावनि
हम चिराशक्त हम निराशक्त संन्यासी
हम मिथिलावासी

धरती जननी छथि अन्न पानि जुटबै छथि
मिथिले मे सीता धरती सँ उपजइ छथि
आबथि जनिका हित रामरूप ध'
स्वयं विष्णु अविनाशी
हम मिथिलावासी

हमही दर्शन दर्शनक कराओल जग के
देसिल बयना केर मर्म बुझाओल सभ के
हमरे सेवक बनि करथि महेश खबासी
हम मिथिलावासी

हमरे घर ब्रह्मा-विष्णु महेश रहै छथि
हमरे घर सरस्वती-भारती बसै छथि
हम साग-पात खा जीबी हमहि अयाची
हम मिथिलावासी

हम ज्ञान की सीखब

अधिकार की कर्त्तव्य की हम आइ की सीखब
जखन अइ बोल माइक हमर छीनल गीत की लीखब

जनै छी राज्य की सरकार की आ आइन कानुन की
सकै छी विश्व सँ विद्रोह क' केओ देत की धमकी

प्रलय के शक्ति शिवसिंहक सलहेसक लोप नहिं भेलै
अरे ओ भारती केर ज्ञान गरिमा नहि कतहु गेलै

जखन बंठा चमारक आइ लाठी हमर साथी अइ
सदा सँ शान्तिप्रिय मैथिल तकर इतिहास साक्षी अइ

छलीं तें शान्त की बुझलें थिकौं निर्बोध वा सूतल
पड़ा जौं छौक प्राणक भय पले मे काँपतै भूतल

जखन हुंकार 'जय मिथिला' क मैथिल युवकगण करतै
तखन दुश्मन कतए पाबी रसातल मे पड़ा जएतै

समन्वय आइ नहि चाही जननि ललकारि रहलै -ए
जखन मा मैथिली केर अश्रुजल धिक्कारि रहलै -ए

बजल चहु ओर रणडंका न कनिओ आव मन शंका
उड़इ मिथिलाक छै झंडा युवक मिथिलाक रण बंका

कलम नहिं खर्ग कर शोभय एखन इतिहास की लीखब
सिखाओल विश्व कें हमही एखन हम ज्ञान की सीखब



कोशी-कमला

जड़ सँ छल विख्यात किछु नहि मिथिला मे
कोशी कमला धार बहैए मिथिला मे

गुजर साग पर कएल अयाची गर्व हमर
साग पात आधार बनल अछि मिथिला मे

वसुधा एव कुटुम्ब घोषणा भेल जतए
भाइ-भाइ दिन-राति लड़ै-ए मिथिला मे

सुग्गो शास्त्रक गप्प करै छल के मानत
लाठी बम बन्दूक चलै-ए मिथिला मे

गाम-गाम चौपाड़ि केन्द्र विद्या के छल
पर निन्दा के केन्द्र बनल अइ मिथिला मे

सामगान घर-घर होइत छल हेमनि धरि
श्वान-गान घर-घर होइत अछि मिथिला मे

कुल देवी बनि पुजा रहल अछि सुपनेखा
मैथिलीक कौचर्य होइत अछि मिथिला मे

भाषा-भूमिक बात मंच के फैशन छइ
मिरजाफर के वंश पलैए मिथिला मे



धन कटनीक गीत

चढ़ा ले रओ बुधना तों हँसुआ पर शान रओ ।
हँसुए मे जान अपन हँसुए परान छइ
हँसुए छै अप्पन गुमान आर शान रओ ॥

हम सब कमाएब आर खाएत केओ आन
लागए छगुन्ता ई छइ केहेन विधान
ककरा लए धर्म-कर्म ककरा लए देश छइ
अमरूख के ठकबा लए छइ भगवान रओ॥

सोनित सुखा क' पसेना बनेलिऐ
तकरा चुआ क' जे खेतो पटेलिऐ
उगिलै तैं धरती ई सोना सुगन्धि भरल
मरुआ खेसारी गहूम आर धान रओ ॥

रोपने छी कटबै आ घर अपन भरबै
अन्नक अभावे ने आब हम मरबै
ठकलक बहुत मुदा आब ने ठकेबै हम
कालो सँ लड़बै अरोपि देबै जान रओ ॥



नवका वर्ष

नवका वर्ष सुखद सुन्दर हो ।
जग व्यापित हो शान्ति
फेर नहि कतौ समर हो ॥

केओ न निरक्षर सभ पंडित हो
लोक आस्था नहि खंडित हो
जगती पुनि महिमा मंडित हो
साम्य भाव हो चित उदार हो
आर विश्व बन्धुत्व अमर हो ॥

नयन न ककरो अश्रु तरल हो
जन गण मन उल्लास भरल हो
हो न कतौ प्राचुर्य प्रदर्शन
आर केओ पुनि रिक्त उदर हो
सभ सक्षम हो उद्यम रत हो
सर्जक प्रतिभा आर प्रखर हो ॥



लेनिन प्रणाम

हे महामान्य
लेनिन महान
शत शत प्रणाम

हे क्रान्तिदूत
हे प्रलयंकर
हे मुक्तिदूत
हे अभयंकर
हे पूर्णकाम
शत शत प्रणाम

हे महाबली
हे युगद्रष्टा
हे महावीर
हे युगस्रष्टा
हे अमर नाम
शत शत प्रणाम
रक्तिम प्रणाम

हे विश्वजयी
हे अक्षय अभय
हे कालजयी
हे मृत्युञ्जय
हे अमिट नाम
शत शत प्रणाम
रक्तिम प्रणाम

विरह गीत : १

हाइ हो जी
बारी रे बयस हो सैयद गेलह विदेशिये
बीति गेलै बारह बरीसे जी ।
हाइ हो जी
रोवत रहलै आहे सैयद माइ रे मदोदरी
रोवत रहलै गोदी के बलकवे जी ।
हाइ हो जी
केना के बिसरल' हो सैयद पंतियो ने दिहल'
केहेन भेलै तोहरो दरेगेजी ।
हाइ हो जी
अगिया लगेबै हो सैयद टाका रे रुपैया
बजर खसैबै ओइ नोकरिए जी ।
हाइ हो जी
कर जोरि आहे सैयद मिनती करै छी
फिरि अबहो अपन नगरिए जी ।



विरह गीत : २

सखि हे हम की गाएब गीत
अजगुत छै विधना के लीला
अजगुत जग के रीत ॥

कारी काजर आँखि लगाबए
कारी टिकुली माङ
कारी केश सभक प्रिय होइछै
बैरी कारी आङ ॥

सरस बसन्त सभक घर आबए
कोइली कुहु कुहु शब्द सुनाबए
पतझड़ सदा हमर जीवन मे
''लोचन'' लखए न आन ॥



बेठुआ

कर्मक नहि ताल मेल
      तागि रहल नूआ के
देखए ने दुषित रक्त
      गारि पढ़े भूआ के
मास बर्ख के गनैछ
      बीति गेल आध शतक
रोटी नदारद आ
      बात करे पूआ के
बेचि देल देश संग
      भूत आ भविष्यहुँ के
नेता कहाबए कहू
      लाज छड़ बेठुआ के



हमर देश बड़ पछुआयल अछि

हमर देश बड़ पछुआयल अछि
ई नहि हमरा लेकिन कोढ़ि छी
सभ उद्योगहि मे लागल अछि ।
बलधनमा बरतन मजैत अछि
पलटू झा पारी चरबै छथि
पंडितजी पतरा तकैत छथि
पजियारो पंजी देखैत छथि
मात कुलक संबंध तकै छथि
एते बिजी काज मे रहितो
भुखमरी सगरो लागल अछि ॥

      पेट बान्हि कऽ खेती कएलौं
      फेकन बाबू ठीक कहै छथि
      डोरो धरि मरहन्ना भ'गेल
      भगवानो अन्याय करै छथि
      भगवाने के दोख देबनि की
      उएह कते हमरा ले करता
      सौसे गाम ढोल पीटलहुँ हम
      डिहबारक पूजा करबा ले
      सभ हमरे कौचर्य करै छल
      बेहरी कहाँ सँ दीते एइले
      धर्मक नामें हँसी लगै अछि
      ई सभ तकरे फल होइत अछि ॥

चरैवेति

चरैवेति चरैवेति चलइत छी दिवा राति
मंजिल धरि पहुँचि पाएब,एखनो तँ बाँकी अछि

अपना ने बूझि पड़ए लागल जे अछि दिसांस
धरब सही दिशा-बाट एखनो तँ बाँकी अछि

आविष्कृत भेल आगि खागि छल सत्य बात
डाहै जे घृणा-द्वेष आगि एखन बाँकी अछि

छोड़ल हम वन-प्रान्तर निरमाओल नगर गाम
दानव सँ मुक्ति पाएब एखनो तँ बाँकी अछि

मरकरीक आलोकेँ आलोकित आङन घर
अन्तर आलोकित हएब एखनों तँ बाँकी अछि

फूसि सभ प्रगति कथा, फुसियाही ई विकास
अन्न वस्त्र जुटा पाएब एखनो तँ बाँकी अछि

बाँकी अछि स्वच्छ मन साम्य भाव चितउदार
मानवताक मूल कथा एखनो तँ बाँकी अछि

एखनहु कोना नचिकेता सन्मुख यमराज केर
बूझब मृत्युक रहस्य एखनो तँ बांकी अछि

एखनो हम ताकीं सत्य ताकी आलोक पुंज
अमृतक संधान पाएब एखनो तँ बाँकी अछि



मनुक्ख

तन्नु थीक विवेकशील विकासशील मनुक्ख
कहि रहल ई बात नहि केओ आन स्वयं मनुक्ख
विकासक की नमूना प्रलयास्त्र केर निर्माण
आइ प्रलयक द्वारि पर अछि ठाढ़ भेल मनुक्ख
विजय पाओल प्रकृति पर नहि प्रकृति जीतल गेल
आइ शत्रु मनुक्ख के अछि स्वयं बनल मनुक्ख
जन्तुओ नहि खाइछ माउस स्वजाति केर ई सत्य
माछ सापक संग अछि अपवाद भेल मनुक्ख
स्नेह सहयोगक सारा पर रोपल विषवृक्ष
शत्रुता संघर्ष के आश्चर्य सभ्य मनुक्ख

चलू खेत खरिहान

भूलल रहलौं सदा गुलाबक फूल पर
आब सोचि की होयत अपना भूल पर
फूल जकर ओ छलै संग तकरे गेलै
अपन अवस्था बेलक खसल बबूर पर
स्वजन पोषणक रहलै-ए इतिहास जकर
उएह दैछ उपदेश त्याग बलिदान पर
अप्पन हाथ बिसरि आनक मजगूत कएल
बेर्थे आब झखै छी अपना भूल पर
माटिक हाल बताओत ओ, कहिओ सोचल
खाली पाएर न पड़लै जकर जमीन पर
पटना दिल्ली गामक करत निदान की
चलू खेत खरिहान खेत के धूर पर ।

किछु लोक

उत्सव मनाबी कखन कक्खन वा शोक
तकरो नहि बोध एतए ओहनो किछु लोक

माफ करी सत्य कथा होइते छइ तीत
टोप टहंकारे नहि बनै पैघ लोक

फुनगी पटा रहल छी जड़िक ने कोनो खोज
सरिपहुँ प्रणम्य अपने हे बुद्धिमान लोक

भाषण सँ भाषा केर होएत उद्धार
टिटही सन टेकथि आकाश किछु लोक

किछु लोक मैथिली कें धन्धा बना लेने अछि
चन्दा उगाहि पालि रहल पेट किछु लोक

बजार मे निलाम करै माइक जे लाज
तकरे विभूति मानि रहल पूजि रहल लोक

बर्खो सँ ठकि रहल जे सांसद हमर विधायक
तकरे पर फूल माला बरिसा रहल-ए लोक

छथि एक नहि अनेक एतय स्वयं-भू-दधीचि
निर्मित न भेल वज्र हति ने सकल असुर लोक

खिस्सा अनन्त ई कही कत्ते कही ककरा
बुझत कथा-व्यथा जे भेटल न तेहेन लोक



जिनगीक व्याकरण

दिन करै बेपर्द जकरा राति पर्दा दैत छइ
जिन्दगी दुतकारि दै छइ मृत्यु आश्रय दैत छइ
आँखि के आन्हर चलैए बाटि घुरि ताकै ने केओ
मोन मे हो जोर तँ लाठी सहारा दैत छइ
घर कतबो यत्न सँ बान्ही न सब दिन काज देत
पानि मे वा रौद मे गाछो सहारा दैत छइ
लोक जकरा लए मरैए मुँह जखन मोरि लैछ
बन्धु एहनो होइत छइ आने सहारा दैछ छइ
जिनगीक व्याकरण घोंघल जाइछ नहि पलथी लगा
जिन्दगी जिबैत अपने आप मोन पड़ैत छइ

नेता आ जनता

दिल्ली आकुल अछि अगबे निर्यात लए
गामक चिन्ता दूनू साँझ बुतात लए
नेता लोकनिक नजरि विदेशी नोट पर
जनताक आँखि नचैए रोटी भात लए
सत्य देश चिन्ता सीमित अइ मंच धरि
वास्तव मे सभ मरैछ अपन गतात ले
देश-लोक-सेवा केर चद्दरि ओढ़ि कए
मिर्जाफर सभ घुमैत अछि संघात लए
भोज्य - पदार्थक लेशो नहि निर्बोध ई
जनता अपने मे लड़ैत अछि पात लए
केना बिसलरक लोक अपन इतिहास के
काल्हुक थिक ई बात दुख एहि बात लए

के हिसाब देत

नेता कहैछ देश उन्नति के सिखर चढ़ल
अवनति कतेक ककर भेल के हिसाब देत

दसमहला बिसमहला बनए रोज सत्य बात
खोपड़ि कतेक रोज खसए के हिसाब देत

शोभा तँ बढ़लै-ए सरिपहुँ राजधानी के
उजड़ल अछि गाम कते तकर के हिसाब देत

मुर्ग-मुसल्लम उड़ैछ पांच तारा होटल मे
फुफरी पड़ैछ कते ठोर के हिसाब देत

नेता पर खर्च कए हजार होइछ प्रति मिनट
कए हजार कैंचा बिनु मरए के हिसाब देत

एक नाम सोना के आखर मे लिखबै ले
नाम कते आइ धरि मेटाएल के हिसाब देत



चुप्प छी

कहबाक ओना छल बहुत किछु हमरा लग
बुझिते हेबैक अहूँ सोचि सएह चुप्प छी

ओही गाम रही अहूँ जाहि गाम घर हमर
व्यर्थ अहाँ हमरा लग एना की बनैत छी

देखल तं कहियो ने एना मे मुँह अपन
आदतिक नाचार मुँह अनके दूसैत छी

बाप छला धन्ना सेठ हाथी हथिसार छलनि
बुझल अछि हमरो की सिक्कड़ि देखबैत छी

उपजाए घराड़ी पर तमाकू अहींक आइ
लाजो नहि गामे गाम भीख जे मङैत छी

कुटिया पिसिया करैक माय नाम दुर्गादत्त
बेटाक कहू कथा ई ने के जनैत छी

एक चुरू पानि बरू डूबि मरू नीक थीक
मिथिलाक नाम पर कलंक की मढ़ैत छी



अद्भुत देश

देशक उन्नति लए नेता सभ व्यस्त भेल अछि
सोचि सोचि देशक जनता संत्रस्त भेल अछि

मेट्रो चैनल थिक प्रमाण देशक उन्नति के
उदयाचल पर सूर्य अकाले अस्त भेल अछि

ओढ़ि रामनामी घुमैत अछि चोर उचक्का
साधुक जाबल मुँह हिम्मतो पस्त भेल अछि

अद्भुत अछि ई देश एकर इतिहासो अद्भुत
शीखण्डी लग भीष्म पितामह पस्त भेल अछि

फूसि बाजि विश्वासक हत्या करए युधिष्ठिर
तकरे धर्मराज केर संज्ञा देल गेल अछि

शब्द ब्रह्म थिक किन्तु अर्थ पर अटकि जाइत अछि
आइ सत्य के सत्य कहब अपराध भेल अछि

किन्तु एना बरतब तँ आर कते दिन बरतब
सूर्य माथ पर गेल बेर नहि थोड़ भेल अछि



बाजल ने जाइ छइ

किछु गीत एहन होइत छइ
गाओल ने जाइ छइ
किछु चीज एहेन होइ छइ
पाओल ने जाइ छइ
टहकैत रहै छैक कोंढ़ मे करेज मे
किछु घाव एहन होइ छइ
देखल ने जाइ छइ
तोड़ै ने देह मोन टूक-टूक करै छई
किछू दर्द एहेन होइ छै
नापल ने जाइ छइ

अपना व्यथे मरब त कोनो तेहेन बात नहि
अनका व्यथे मरैछ जे
जानल ने जाइ छइ
कहबाक लेल बात बहुत छल मोन मे
किछु बात एहन होइ छइ
बाजल ने जाइ छइ



हम ने जानी

घर छाड़ब कही नव बान्हब
पार लागत न एको अहाँ सँ
आगि कोनटा मे जा क' लगाएब
हो अहीं सक मुदा हम ने जानी

गाछ रोपब कही वा पटाएब
पार लागत न एको अहाँ सँ
फूल देखितहि चोरा क' तोड़ब
की विवेकी अहाँ हम ने जानी

तेल ढारब कही ममड़ी झाड़ब
पार लागत ने एको अहाँ सँ
मात्र उसका के टेमी जराएब
थिक उचित ई केना हम ने जानी

नीक लागए इजोते अहाँ के
ई नियमें थिके एइ जहाँ के
किन्तु अन्दर अन्हारक बसेरा
दूर होएत केना हम ने जानी



अष्टपदी

नेता

नाङरि दबा रहै छथि दुबकल जे संसद मे
सएह चुनावक बेर गाम मे गरजि रहल अछि
के पूछओ बाबू भू-भाषा हित की कएलहुँ
अपनेक मध्य प्रदेश बेस तँ चतरि रहल अछि
नगद बैंक बैलेंस बनाओल कतेक शहर मे
एहि ठाम तँ गामक गामे उजड़ि रहल अछि
सुत्र बथाने नीक अहाँ सन हड़ाशंख सँ
एमरीदा नहि भोट सोंट सभ पिजा रहल अछि

जनता

मण्डल आर कमण्डल केरि एहि राजनीति मे
जनता भेल तबाह आ नेता मओज करै-ए
भाइ भाइ केर जानी दुश्मन घात लगऔने
घृणा द्वेष ज्वाला मे गामक-गाम जरै-ए
आइ कठिन चिन्हब दुर्योधन धर्मराज सभ
सभ जन हित केर न्याय धर्म केर दम्भ भरै-ए
लक्ष्य सभक दिल्लिक सिंहासन सत्ता शासन
जनता जनु द्रौपदी निवस्त्र बफारि कटैए

फेर पाटलिपुत्र

बसुधा एव कुटुम्ब सगर्व जतए घोषित छल
वर्णवाद के अगराही मे आइ जरैत 'छि
गौतम कपिल कणाद जैन बुद्धक धरती पर
अगबे गीदर गिद्ध आइ ढकरल फिरैत 'छि
लाठी बम बन्दूक बलें सरकार चलै-ए
जन्मभूमि थिक जनतंत्रक इतिहास कहैत 'छि
अत्याचारी शासक सँ मुक्तिक निमित्त तें
फेर पाटलिपुत्र कोनो चाणक्य तकैत 'छि

उदार नीति

नीति अनीतिक नाम उधार उदार कहाबय
आइ विश्व बाजार देश नीलाम चढ़ल अछि
अरथी अर्थक आजादी केर कान्ह उठओने
कीर्तनियाँ दल राम नाम क' सत्य चलल अछि
थपरी झालिबज्जा ढोलबज्जा पोन पिटै-ए
चिकरि गबै-ए भाँट सूर्य दिस देश बढ़ल अछि
पड़ल छगुन्ता लोक शोक थिक ई ने उत्सव
सरिपहुँ बानर हाथ आइ मणिहार पड़ल अछि

छुबुध लगै-ए

हाल खेत मे होइत छैक हमरा बूझल छल
आब कुशल क्षेमक बदला सभ हाल पुछै-ए
के नहि जानए आम होइत अछि फल के राजा
आब बात साधारण के सब आम कहै - ए
ऋतु मौसम बनि गेल बनैया बनल जंगली
पनिपिआइ जलखै नहि सब नाश्ता करै-ए
पढ़ुआ लिखुआक एहेन अवस्था की पुछै छी
सोचि भविष्य मैथिलक सरिपहुँ छुबुध लगै-ए

शहीद

अहाँ की देखाएब बहुत देखल देखाबए वला
बाउ रे, ई केश हमर रौदा मे पाकल नहि
दुनिया जनैछ जे बजैछ से करैछ नहि
आर जे करैछ चुप चाप मुदा बाजल नहि
कुकुर झमाउर करै हाथी लेल धन्न सन
मस्त भेल बाट चलए घुरियो कऽ ताकल नहि
एक नहि हजारो मुक्तियोद्धा अछि शहीद भेल
बैसल नहि बीच बाट पाछू घुरि ताकल नहि

मैथिलीक मणिपद्म मैथिलक मान्य मनीषी
मा मिथिलाक महान विभूतिक एक छला ओ
सेनानी स्वाधीनताक साधक सन्धानी
स्नेही सहज स्वभाव सुवक्ता की न छला ओ
एक देह बहुरूप छला लोरिक सलहेस ओ
नैका बनिजारा दुलरा रणपाल छला ओ
लवहरि कुशहरि कतौ - कतौ अर्द्धनारीश्वर
गाम बहेड़ा के वर्माजी धन्य छला ओ ।



बाट अहांक ताकत

हम रही वा ने रही याद हमर बांचत
भओत सुन्न बाट जकां बाट अहाँक ताकत

संग छलहुँ दिन जते बात बहुत सिखल
पाओल बहुत की गमाओल ने लिखल
बिसरि सकब हम केना प्राण जात बांचत

बाजल जं होइ कथा कटु त अनजाने
किन्तु अहां उनटहिं लगाओल तकरे माने
दोष देब दर्पण के उचित हम ने मानी
किन्तु फोड़ि देल अहां होइत एहन ज्ञानी
चनकल जे काच जोड़ि सकत कोन तागत

शत्रुक संग युद्ध करब उचित सभ कहैत'छि
मारि मित्र केर संग मूर्खटा करैत'छि
कतौ रहब हम करब कुशलेक कामना
खगता हो शोर करी तेजि भूल भावना
हम ने वेर बीतल जे धुरि ने फेर ताकत

